सैनिक मित्र

दिसंबर, 2021

संवाद

VOLUME - 01 ISSUE -5 राष्ट्र रक्षा न समं पुण्यम्

माँ भारती के वीर सपूतों को राष्ट्र की श्रद्धांजली

भारत का वीर सपूत

1958 - 2021

माँ भारती के वीर सपूतों को राष्ट्र की श्रद्धांजली

“माधव की गीता का ज्ञान हो तुम मेरी वाणी का पावन गान हो तुम। और मेरे चारों तीरथ धाम हो तुम ए हिंद के गौरव नमन मेरा.....”

8 दिसंबर का वो स्याह, दुर्भाग्यपूर्ण दिन जिस दिन हमने हवाई दुर्घटना में जनरल बिपिन रावत, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ, श्रीमती मधुलिका रावत, अध्यक्ष डीडब्ल्यूडब्ल्यूए और 11 अन्य सैन्य जाबांजों को खोया, इतिहास के पन्नों में काला दिवस है। कई दिन दिल और दिमाग अचेत अवस्था में यही सोचते रहे कि ऐसे कैसे हो सकता है।
बलिदानी हुतात्मा जनरल विपिन रावत की अगुवाई में सेना की कई ऐसी रूढ़ी वादी परंपराएं टूटी जिनसे ऊंच नीच का भेद भुलाकर सबको समान भाव और सम्मान से देखा जाने लगा।कई ऐसे साहसी निर्णय लिए गए जो देश और सेना के लिए स्वर्णिम अवसर बनकर भारत को पुन: विश्व गुरु बनने की राह में अहम भूमिका निभा रहे थे। सेना के सशस्त्र आधुनिकरण के साथ कई ऐसे अहम फैसले जो देश की एकता अखंडता के लिए अति आवश्यक थे।
वीरांगना मधुलिका रावत का देश और समाज के प्रति जो समर्पण था वह शब्दों में वर्णन करना कठिन है। जनरल विपिन रावत के साथ जिस तरह उन्होंने कंधे से कंधे मिलाकर परिवार की पूरी जिम्मेदारी उठाकर और एक कुशल ग्रहणी के रूप में जो आपने अपना कर्तव्य निभाया वो भारत की एक महान वीरांगना ही कर सकती है।मेरी लेखनी आपकी तपस्या को कोटि कोटि नमन वंदन करती है।
ब्रिगेडियर एल एस लिड्डर की पत्नी गीतिका लिड्डर के साहस को नमन है जो अपने पति के अंतिम संस्कार के पश्चात जनरल रावत की बेटियों कृतिका एवं तारिणी को अनवरत ढांढस बंधाकर उन्हे संभाल रही थी। नमन है पृथ्वी सिंह के माता, पिता और पत्नी को जिन्होंने अपने इकलौते सपूत को मां भारती के चरणों में अर्पण कर दिया।
जनरल विपिन रावत और उनकी पत्नी वीरांगना मधुलिका रावत एवं गौरवशाली सेना की समस्त होनहार टीम, बलिदानी सैन्य बल एवं उनके परिवारों को बारंबार कोटि कोटि नमन और वंदन है जिन्होंने मां भारती के चरणों में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। हम सबके लिए उस घर का कोना-कोना, वह चौखट तीर्थ समान है जिस घर में मां भारती के सच्चे सपूतों ने अपना बचपन बिताया।
हे परम पिता परमात्मा! शहीदों के परिवारों को इस दुख को सहन करने की शक्ति देना और भारत मां के लालों को अपने चरणों में स्थान देना। भारत देश का बच्चा-बच्चा आपके त्याग बलिदान समर्पण का सदैव ऋणी रहेगा। राष्ट योद्धा कभी पंच तत्व में विलीन नहीं होते वो अमर हो जाते है।

अश्रुपूरित भावभीनी श्रद्धांजलि

-अंजलि शिशौदिया (अंजू)

माँ भारती के वीर सपूत

ब्रिगेडियर एलएस लिद्दर: हेलीकॉप्टर दुर्घटना में मारे गए चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) के रक्षा सहायक पंचकुला के परिवार में उनकी पत्नी गीतिका, एक स्कूल शिक्षक और 16 वर्षीय बेटी है। सेना मेडल और विशिष्ट सेवा मेडल से अलंकृत, ब्रिगेडियर लिडर को दिसंबर 1990 में भारतीय सैन्य अकादमी से पास आउट होकर जम्मू और कश्मीर राइफल्स की दूसरी बटालियन में कमीशन किया गया था। उन्होंने वास्तविक नियंत्रण रेखा के साथ जम्मू और कश्मीर के आतंकवाद विरोधी माहौल में भी काम किया।

लेफ्टिनेंट कर्नल हरजिंदर सिंह: लेफ्टिनेंट कर्नल सिंह 11 गोरखा राइफल्स के थे, रावत के समान रेजिमेंट। उन्होंने अपनी बटालियन के साथ विभिन्न अभियानों में काम किया था, जिसमें सियाचिन ग्लेशियर पर तैनाती और संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन में कार्यकाल शामिल था। वह मूल रूप से लखनऊ के रहने वाले थे लेकिन बाद में नई दिल्ली में बस गए।

नाइक गुरसेवक सिंह: 35 वर्षीय नायक गुरसेवक सिंह ने पिछले तीन वर्षों से जनरल रावत के साथ सेवा की। सिंह तरनतारन जिले के खालरा के डोडे सोढियां गांव के रहने वाले थे। उनकी पत्नी, दो बेटियां और एक बेटा, जिनकी उम्र क्रमश: 10, 7 और 4 साल है। गुरसेवक 2000 में भारतीय सेना में शामिल हुए थे और तीन साल पहले जनरल रावत के साथ संलग्न होने से पहले उधमपुर में तैनात थे। सेना में उनके करियर के अधिकांश वर्ष जम्मू-कश्मीर के सीमांत क्षेत्रों में व्यतीत हुए, जहाँ उग्रवाद के कारण जीवन के लिए खतरा था।

"फिदा कर जान अपनी देश पर तुम मुस्कराते हो-
सांस थमती गई फिर भी वतन के गीत गाते हो-
शीश कट जाए सरहद पर वतन के आन के खातिर-
ए मेरे वीर जवानों तुम ये जज्बा कहां से लाते हो"

-अंजलि शिशौदिया (अंजू)

नायक जितेंद्र कुमार : 3 पैरा एसएफ के नायक जितेंद्र कुमार सीहोर जिले की इच्छावर तहसील के धमंडा गांव के रहने वाले थे. सेना में नायक के पद पर तैनात जितेंद्र, विपिन रावत के पीएसओ थे। उनकी पत्नी और एक साल का बेटा कुमार बचे हैं।

दुर्घटना में जीवित बचे कैप्टन वरुण सिंह

तमिलनाडु के कुन्नोर जिले में बुधवार, 8 दिसंबर को एमआई-17वी5 हेलिकॉप्टर वेलिंगटन के सुलूर में वायु सेना के अड्डे से उड़ान भरने के ठीक बाद दुर्घटनाग्रस्त हो गया। दुर्घटना के कारण कुछ भारतीय रक्षा सेवा कर्मियों की अकाल मृत्यु हो गई। सूची में शीर्ष नामों में सीडीएस जनरल बिपिन रावत और उनकी पत्नी मधुलिका रावत, ब्रिगेडियर एलएस लिद्दर, लेफ्टिनेंट कर्नल हरजिंदर सिंह, नाइक गुरसेवक सिंह, नायक जितेंद्र कुमार, विवेक कुमार और बी साई तेजा, और हवलदार सतपाल राय, विंग कमांडर पृथ्वी सिंह चौहान, जिन्होंने घातक दुर्घटना में अपना अंत किया। जीवित बचे भारतीय वायुसेना के ग्रुप कैप्टन वरुण सिंह का वेलिंगटन के मिलिट्री अस्पताल में इलाज चल रहा है।

लांसनायक विवेक कुमार: लांस नायक विवेक कुमार हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के जयसिंहपुर के रहने वाले थे। कुमार जनरल बिपिन रावत के पीएसओ थे।

लांस नायक बी साई तेजा: लांस नायक बी साई तेजा, जिन्होंने जनरल रावत के व्यक्तिगत सुरक्षा अधिकारी या (पीएसओ) के रूप में कार्य किया, ने सिर्फ सात महीने पहले यह पद हासिल किया था। आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले के रहने वाले, 27 वर्षीय,2012 में भारतीय सेना में शामिल हुए।

हवलदार सतपाल सिंह: दार्जिलिंग के तकदाह के हवलदार सतपाल राय, सीडीएस जनरल बिपिन रावत के निजी सुरक्षा अधिकारी थे। भारतीय वायु सेना के अनुसार, डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज में डायरेक्टिंग स्टाफ, वरुण सिंह, गंभीर स्थिति में हैं और वर्तमान में वेलिंगटन के सैन्य अस्पताल में उनका इलाज चल रहा है।

हेलिकॉप्टर उड़ाने वाले विंग कमांडर विंग कमांडर पृथ्वी सिंह चौहान: विंग कमांडर पृथ्वी सिंह चौहान ने सीडीएस जनरल बिपिन रावत और 12 अन्य लोगों के साथ तमिलनाडु में दुर्घटनाग्रस्त हुए हेलीकॉप्टर को उड़ाया। 42 वर्षीय विंग कमांडर पृथ्वी सिंह चौहान कोयंबटूर में भारतीय वायु सेना स्टेशन में तैनात थे, लेकिन उनका जन्म और पालन-पोषण आगरा में हुआ था। वह 2000 में भारतीय वायु सेना में शामिल हुए। वह 22 जून 2002 को एक कमीशन अधिकारी बने और 2015 में विंग कमांडर के रूप में पदोन्नत हुए।

-डेस्क (सै.मि.सं)

रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर में श्रद्धांजलि सभा

रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर खंडवाया, शिकारपुर में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई, जिसमें विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री गोविंद गुप्ता जी ने वीरगति को प्राप्त हुए सीडीएस जनरल बिपिन रावत जी की वीरता, शौर्यता तथा पराक्रम के बारे में बताते हुए श्रद्धांजलि दी तथा छात्रों को वीर बलिदानों के पदचिन्हों पर चलने के लिए प्रेरित किया।श्रद्धांजलि सभा में श्री अशोक शर्मा जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत करते हुए स्वर्गीय जनरल बिपिन रावत जी के जीवन पर तथा देश सेवा में उत्कृष्ट योगदान पर प्रकाश डाला । विद्यालय के समस्त शिक्षकों और छात्रों ने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए माँ भारती की सेवा करने का संकल्प लिया।

भारत का वीर सपूत

1958-2021

जनरल विपिन रावत

भारत के पहले सीडीएस जनरल बिपिन रावत एक दूरदर्शी थे जिन्होंने भारतीय सेना के उच्च रक्षा संगठन में दूरगामी सुधारों की शुरुआत की। उन्होंने भारत के संयुक्त थिएटर कमांड की नींव बनाने और सैन्य उपकरणों के बढ़ते स्वदेशीकरण को प्रोत्साहन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, एक विरासत जिसे आगे की पीढ़ियों द्वारा आगे बढ़ाया और मजबूत किया जाएगा।

जनरल बिपिन रावत सेंट एडवर्ड स्कूल, शिमला और राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के पूर्व छात्र हैं। उन्हें 16 दिसंबर 1978 को इन्फैंट्री की ग्यारहवीं गोरखा राइफल्स की पांचवीं बटालियन में नियुक्त किया गया था, जिस बटालियन की कमान उनके पिता ने संभाली थी। भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून से स्नातक होने के दौरान, उन्हें प्रतिष्ठित 'स्वॉर्ड ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया गया।

जनरल रावत के पास व्यापक परिचालन अनुभव था, उन्होंने युद्ध और संघर्ष स्थितियों के व्यापक स्पेक्ट्रम में सेवा की। उन्होंने पूर्वी सेक्टर में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर एक इन्फैंट्री बटालियन और कश्मीर घाटी में राष्ट्रीय राइफल्स सेक्टर की कमान संभाली। इसके तुरंत बाद, उन्होंने कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (DRC) में एक अध्याय VII मिशन में एक बहुराष्ट्रीय ब्रिगेड की कमान संभाली। उन्हें जम्मू और कश्मीर में नियंत्रण रेखा के साथ एक इन्फैंट्री डिवीजन की कमान सौंपी गई थी और वह उत्तर-पूर्व में कोर कमांडर थे। एक सेना कमांडर के रूप में, वह पश्चिमी मोर्चे के साथ डेजर्ट सेक्टर में संचालन की देखरेख के लिए जिम्मेदार थे।

जनरल रावत ने कई महत्वपूर्ण निर्देशात्मक और स्टाफ नियुक्तियां की हैं। इनमें भारतीय सैन्य अकादमी

(देहरादून) और जूनियर कमांड विंग में वरिष्ठ प्रशिक्षक के रूप में अनुदेशात्मक कार्यकाल शामिल हैं। वह सैन्य संचालन निदेशालय में जनरल स्टाफ ऑफिसर, कर्नल और बाद में सैन्य सचिव की शाखा में उप सैन्य सचिव, पूर्वी रंगमंच के मेजर जनरल जनरल स्टाफ और थल सेनाध्यक्ष के उप प्रमुख भी थे। जनरल 31 दिसंबर 2016 से 31 दिसंबर 2019 तक थल सेनाध्यक्ष थे।

डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज (वेलिंगटन) और कमांड एंड जनरल स्टाफ कोर्स, फोर्ट लीवेनवर्थ (यूएसए) से स्नातक। उन्होंने महू में हायर कमांड कोर्स में भाग लिया और नेशनल डिफेंस कॉलेज, नई दिल्ली से स्नातक थे।

अकादमिक रूप से इच्छुक, जनरल ने राष्ट्रीय सुरक्षा और सैन्य नेतृत्व पर कई लेख लिखे हैं जो विभिन्न पत्रिकाओं और प्रकाशनों में प्रकाशित हुए हैं। उनके पास प्रबंधन और कंप्यूटर अध्ययन में दो डिप्लोमा भी थे। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा जनरल को 'मिलिट्री मीडिया स्ट्रैटेजिक स्टडीज' पर उनके शोध के लिए 'डॉक्टरेट ऑफ फिलॉसफी' (पीएचडी) से सम्मानित किया गया।

अपने पूरे सेवा करियर के 42 वर्षों की अवधि में प्रदर्शित विशिष्ट सेवा और वीरता के लिए, जनरल बिपिन रावत को कई राष्ट्रपति पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जिसमें पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम, एसएम और वीएसएम शामिल हैं। इनके अलावा, उन्हें दो मौकों पर थल सेनाध्यक्ष प्रशस्ति और सेना कमांडर के प्रशस्ति से भी सम्मानित किया जा चुका था। कांगो में संयुक्त राष्ट्र के साथ सेवा करते हुए, उन्हें दो बार फोर्स कमांडर्स कमेंडेशन से सम्मानित किया गया था।

जनरल बिपिन रावत को 31 दिसंबर 2019 को भारत का पहला चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ नियुक्त किया गया था।

-डेस्क (सै.मि.सं)

ये हैं हमारे युद्ध स्मारक

मारवाड़ स्मारक

मारवाड़ मेमोरियल का निर्माण उन सैनिकों की याद में किया गया है जिन्होंने दीव द्वीप की मुक्ति के लिए 18 दिसंबर 1961 को 'ऑप विजय' के दौरान अपने प्राणों की आहुति दी थी और पुर्तगाल के गवर्नर मेजर फर्नांडो डी' अल्मेडा ई-वास्कोनसेल्स को द्वीप को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर किया था। भारत संघ को दीव।

विजय युद्ध स्मारक

विजय युद्ध स्मारक, जिसे पहले कामदेव का धनुष कहा जाता था, चेन्नई में एक स्मारक है, जिसे मूल रूप से प्रथम विश्व युद्ध के दौरान मित्र देशों की सेनाओं की जीत के उपलक्ष्य में बनाया गया था और बाद में द्वितीय विश्व युद्ध, 1948 कश्मीर आक्रमण, 1962 चीन के साथ युद्ध और 1966 और 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के लिए विजय युद्ध स्मारक बन गया।

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक दक्षिणी कमान पुणे छावनी में स्थित है। यह स्वतंत्रता के बाद के युद्धों के शहीदों को समर्पित है।

लौंगेवाला स्मारक

लौंगेवाला मेमोरियल 05 दिसंबर 1971 को मातृभूमि के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर शहीदों को सम्मानित करने के लिए समर्पित है।

-डेस्क (सै.मि.सं)

सैनिक मित्र संवाद के पाठक इसी तरह की रोचक जानकारी निम्न ईमेल पते पर भेज सकते हैं।

smsamvad@gmail.com

हिली की लड़ाई (नवम्बर-दिसंबर 1971)

हिली की लड़ाई निःसंदेह रूप से 1971 के भारत-पाक युद्ध की सबसे क्रूर लड़ाई थी । यह प्रमुख अभियानों मे से एक थी और इसमें दो युद्ध शामिल थे, हिली की पहली लड़ाई (22-24 नवंबर 1971) और दूसरी लड़ाई 09 से 11 दिसंबर 1971 को लड़ी गई । अंतरराष्ट्रीय सीमा ने हिली शहर को दो भागों में विभाजित किया, जिसमें पाकिस्तानी रेलवे लाइन उत्तर-दक्षिण संरेखण के साथ चल रही थी। यह शहर भारत की ओर था, जबकि पाकिस्तान पक्ष बहुत कम आबादी वाला था ओर इसमें खुले धान के खेतों वाले कई गाँव शामिल थे । वासुदेवपुर, चांदीपुर, नौपारा और मोरापारा गाँव हिली के आसपास स्थित थे । पाकिस्तानियों ने अपने डिफ़ेंस को तैयार और सज्जित किया तथा लंबे समय तक मजबूर किया था । चार इन्फैंट्री बटालियन और 63 कैवेलरी एक स्क्वाड्रन के साथ 202 माउंटेन ब्रिगेड को हिली को हासिल करने का काम सौंपा गया ।

हिली की पहली लड़ाई 22 नवंबर 1971 को, 8 गार्ड्स ने 63 कैवलरी स्क्वाड्रन के समर्थन में 5 गढ़वाल राइफल के साथ, हमले का नेतृत्व किया । हमलावर कंपनियों ने दुश्मन के गढ़ में घुसकर नौपारा को हासिल नहीं कर सकी । 23 नवंबर को, 5 गढवाल राइफल्स की कंपनी ने वासुदेवपुर बी ओपी को हासिल कर लिया और 8 गार्ड्स के पश्चिमी हिस्से को सुरक्षित कर लिया । इस सफलता से संघर्ष को बल मिला और मोरपारा के बड़े हिस्से पर 8 गार्डस् का कब्जा हो गया । सटीक गोलीबारी और टैंक फायर से पाकिस्तानी जवाबी हमले के प्रयास को विफल कर दिया गया । 8 गार्ड्स ने मारापारा, 22 मराठा लाइट इन्फैंट्री ने नौपारा और 5 गढ़वाल ने 25 नवंबर 1971 को वासुदेवपुर को हासिल कर लिया । दुष्मन ने कई बार इन इकाइयों के संचार को रोकने की कोशिश की, और लगातार भारी गोलाबारी की । इसके बावजूद, हासिल किए क्षेत्रों की चकबंदी 10 दिसंबर 1971 तक आगे के प्रयासों के लिए जारी रही ।

हिली की दूसरी लड़ाई । यह 09/10 दिसंबर की रात को शुरू हुई, जिसमें 8 गार्डस्, चांदीपुर, डंगापारा, हकीमपुर, पाक हिली और हाई स्कूल में पाँच लड़ाईयाँ लड़ रहे थे । 22 मराठा लाइट इन्फैंट्री ने दुष्मन के मोर्चों में घुसकर दुर्रा और बारा चेंग्राम को हासिल कर लिया । 4 राजपूत ने 10 दिसंबर को बिसापारा को हासिल कर लिया और 5 गढ़वाल ने पहाड़ी परिसर से दुष्मन को खदेड़ दिया । 10 दिसंबर को दुष्मन ने शवों को छोड़कर पीछे हटना शुरू कर दिया और भारतीय सैनिकों ने बड़ी संख्या में दुश्मन के हथियार, गोला-बारूद, उपकरण और वाहनों पर कब्जा कर लिया।

हिली की लड़ाई को भारतीय सेना की अत्यधिक प्रेरित इकाइयों के सैनिकों के एक बेहतरीन तालमेल द्वारा सभी बाधाओं के खिलाफ जीतने के लिए साहस, बलिदान और दृढ संकल्प का एक उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। यह वास्तव में, भारतीय सेना की इकाइयों के बीच एक कठिन परिश्रम का नतीजा था, जिसमें दोनों पक्षों ने सेशन/प्लाटून कमांडरो के नेतृत्व में सैनिकों के छोटे निकायों द्वारा कई अलग-अलग लड़ाई लड़ीं । भारतीय सेना के कनिष्ठ लीडरो ने विशेष नेतृत्व का प्रदर्शन किया, दुश्मन की गोलाबारी का सामना करने के लिए अपनी जगह तैयार की और अनुकरण ही है साहस और प्रतिबद्धता के व्यक्तिगत उदाहरण स्थापित किए । बहादुर भारतीय सैनिकों ने तीन महावीर चक्र, छह वीर चक्र, छह सेना पदक, एक विशिष्ट सेवा पदक और पाँच मेंशन-इन-डिस्पैच के साथ गठन को गौरवान्वित किया । यह लड़ाई इस तरह से भी अनोखी थी कि यह भारत-पाकिस्तान युद्ध की आधिकारिक शुरूआत से पहले शुरू हुई और पाकिस्तान के औपचारिक आत्मसमर्पण के बाद भी जारी रही ।

-डेस्क (सै.मि.सं)

आपको हमारा यह अंक कैसा लगा अपनी राय एवं अपने सुझाव हमें निम्न ई–मेल smsamvad@gmail.com पर अवश्य भेजें।

सम्पादकः प्रमोद कामत, **उप–सम्पादकः** दीपक स्वरूप
संरक्षकः डा. हेमेन्द्र सिंह यादव, **सलाहकार मण्डलः** रवि पाराशर एवं विनोद राजपूत